❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को आर्यजगत की ओर से
197वें महर्षि दयानन्द सरस्वती
जन्मोत्सव एवं ऋषि बोधोत्सव की
हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 44, अंक 15 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 1 मार्च, 2021 से रविवार 7 मार्च, 2021
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्त्वावधान में
महर्षि दयानन्द सरस्वती
197 वें
जन्मोत्सव
पर

फाल्गुन कृष्ण 10 (दयानन्द दशमी) 2077 विक्रमी तद्नुसार सोमवार 8 मार्च, 2021

यज्ञ-प्रवचन, भजन संध्या एवं भव्य जन्मदिवस समारोह

रविवार 7 मार्च, 2021	रविवार 7 मार्च, 2021	रविवार 7 मार्च, 2021	सोमवार 8 मार्च, 2021
महर्षि दयानन्द गौसम्वर्धन केन्द्र	आर्यसमाज कीर्ति नगर	आर्यसमाज प्रशान्त विहार	आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी
गाजीपुर, दिल्ली (निकट आनन्द विहार बस अड्डा)	एस. डी. पब्लिक स्कूल, रामा रोड, दिल्ली-15	सैक्टर-14, दिल्ली-110085	नई दिल्ली-110065
सायं 3:00 से 5:30 बजे	सायं 3:00 से 5:30 बजे	सायं 3:00 से 5:30 बजे	सायं 3:00 से 5:30 बजे

जन्मोत्सव कार्यक्रमों का होगा लाइव प्रसारण
आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

समस्त आर्यसमाजों एवं आर्यजन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं, सिद्धान्तों एवं आर्य समाज की मान्यताओं को जनमानस तक पहुंचाने में सहयोगी बनकर संगठन शक्ति का परिचय दें।

कृपया ध्यान दें : सरकार द्वारा जारी कोरोना बचाव दिशा-निर्देशों के कारण प्रवेश सीमित हैं। कृपया मास्क, सैनिटाजर एवं सामाजिक दूरी का विशेष ध्यान रखें।

धर्मपाल आर्य	ओम प्रकाश आर्य	शिव कुमार मदान	मृदुला चौहान	अरुण प्रकाश वर्मा	विनय आर्य	सुखबीर सिंह आर्य	शिवशंकर गुप्ता	सुरेन्द्र आर्य	सुरेशचन्द्र गुप्ता	कृपाल सिंह	विद्यामित्र ठुकराल
प्रधान	उप प्रधान	उप प्रधान	उप प्रधान	उप प्रधान	महामन्त्री	मन्त्री	मन्त्री	मन्त्री	मन्त्री	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबू के संस्थापक, आर्यसमाज की महान विभूति स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती का निधन
आर्यसमाज की अपूर्णीय क्षति

महर्षि दयानंद सरस्वती जी महान अनुयायी, आर्षपाठ विधि के प्रचारक, संवर्धक,आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, आबूपर्वत के संस्थापक स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी का 28 फरवरी, 2021 को प्रात: 3:05 बजे लगभग 85 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे काफी समय से अस्वस्थ चल रहे थे। उन्हें आमाश्य का कैंसर था। उनका अन्तिम संस्कार आगामी दिन 1 मार्च, 2021 को गुरुकुल आबू पर्वत में प्रात: 9 बजे सम्पन्न हुई। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा भी सोमवार 1 मार्च को दोपहर 3 से 5 बजे तक गुरुकुल में सम्पन्न हुई।

स्वामी जी का सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के प्रचार प्रसार के लिए पूर्णरूपेण समर्पित था, आपके त्याग, तपस्या और साधना पूर्ण सानिध्य में सैकड़ों विद्यार्थियों ने अपने जीवन को गरिमा प्रदान की है। स्वामी जी के आकस्मिक प्रस्थान से आर्य समाज की बहुत बड़ी हानि हुई है, जिसकी पूर्ति हो सकतना कठि न है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य सन्देश परिवार एवं समस्त आर्य जगत् की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

ओ३म्
दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से
महर्षि दयानन्द बोधोत्सव एवं शिवरात्रि के
अवसर पर आयोजित
महर्षि दयानन्द सरस्वती
विशाल ऋषि मेला
फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी सम्वत् 2077 विक्रमी तद्नुसार बृहस्पतिवार, 11 मार्च, 2021
स्थान : रघुमल आर्य कन्या सी.सै. स्कूल, राजा बाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-1
यज्ञ : सायं 3 बजे
सार्वजनिक सभा : सायं 3:30 बजे से 5:30 बजे तक
मधुर भजन एवं संगीत
बच्चों द्वारा आकर्षक प्रस्तुतियां
सार्वजनिक सभा
इस कार्यक्रम का लाइव प्रसारण केवल आर्य संदेश टीवी पर देखें
www.AryaSandeshTV.com
निवेदक
आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पंजी०)
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

देववाणी - संस्कृत **वेद-स्वाध्याय**

मैं मोक्ष प्राप्त करूँ

नाहमतो निरया दुर्गहैतत् तिरश्चता पार्श्वान्निर्गमाणि।
बहूनि मे अकृता कर्त्वानि युध्यै त्वेन सं त्वेन पृच्छै।। -ऋक्. 4/18/2
ऋषिः वामदेवः।। **देवता** - इन्द्रादिती।। **छन्दः** त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ - **अहम्**= मैं **अतः**= इस संसारी रास्ते से न **निरयाः** = नहीं निकलूँगा। **एतत् दुर्गहा** = यह मेरे लिए कठिन है, दुर्ग्रह है। मैं तो **तिरश्चता** = सीधे मार्ग से **पार्श्वात्** = सामने के पार्श्व से ही **निर्गमाणि** = भेदन करके निकल जाऊँगा। मैंने तो **बहूनि** = बहुत-से **अकृता** = अभी तक किसी से न किये गये कर्मो को **कर्त्वानि** = करना है। **त्वेन** = एक से मैं **युध्यै** = लड़ूँगा, जबकि **त्वेन** = एक से, दूसरे से **संपृच्छै** = मैं पूछूँगा, नम्र होकर उपदेश प्राप्त करूँगा।

विनय - इस सांसारिक पगडंडियों वाले रास्ते से मैं नहीं चलूँगा, जिससे संसार चलता है। मैं तो सीधा अपने लक्ष्य पर पहुँचूँगा। मैं मामूली मनुष्य नहीं हूँ, मैं श्रेष्ठ देव हूँ। मैं भोग भोगने आया हुआ पृथिवी पर रेंगनेवाला कोई संसारी कीड़ा नहीं हूँ, मैं परब्रह्म की ओर वेग से उड़नेवाला अदम्य आत्मा हूँ। सांसारिक सुखों के पीछे फिरना और वहाँ नाना दु:ख भोगना-इस रास्ते को मैं नहीं पकडूँगा। मेरे लिए यह बड़ा दु:खप्रद है। इस संसाररूपी बड़े भारी गर्भ में अन्य संसारियों की तरह रास्ता पकड़ने के लिए मैं अपरिमित समय तक पड़ा नहीं रह सकता। मैं तो अभी इस संसार-बन्धन से बाहर निकलूँगा, मुक्त होऊँगा। मैं सांसारिक सुखों की दु:खरूपता को जानता हूँ। मैं ज्ञानी हुआ हूँ, मैं अब इनमें नीचे नहीं उतरूँगा। मैं तो सीधा चलूँगा। सामने के पार्श्व को तोड़कर, दीवार को फोड़कर सीधा बाहर निकलूँगा। तुम मुझे चाहे चले रास्ते से ही चलने को कहते रहो, पर मैं तो धारा को चीरकर, पहाड़ को लाँघकर सीधा अपने लक्ष्य पर पहुँचूँगा। तुम कहते हो कि यह असम्भव है, पर मैं कहता हूँ कि मैंने तो अभी बहुत-से ऐसे कार्य करने हैं जो संसार के लिए नये हैं। मैं आश्रम-क्रम से न चलकर अभी सीधा संन्यासी बनूँगा। इस संसार में पूर्ण ब्रह्मचारी होना असम्भव समझा जाता है, पर मैं पूर्णरूप से ब्रह्मचारी बनूँगा। अपने-से राग-द्वेष को बिल्कुल निकाल देना बेशक समुद्र को सुखा देना है, पर मैं इस प्रकार राग-द्वेष से सर्वथा रहित भी होऊँगा। तुम बेशक मुझे संसार के बनाये रास्तों से ही धीमे-धीमे चलने को कहते हो, पर मैं तो सब संसार से उलटा चलूँगा। मैं संसार-भर से लड़ूँगा। हाँ, जहाँ मैं इस सब संसार से लड़ूँगा, वहाँ प्रभु के सामने झुकूँगा। जहाँ एक ओर इस मत्त संसार से लड़ाई ठानूँगा, पग-पग पर भिड़ूँगा, वहाँ दूसरी ओर अपने परम गुरु से नम्रभाव से पूछूँगा, शिष्य-भाव से उपदेश प्राप्त करूँगा। एवं, उस प्रभु की ओर वेग से आकर्षित होता हुआ और प्रभु के उस प्रबल आकर्षण में मार्ग की सब विघ्न-बाधाओं को विनष्ट करता हुआ मैं अभी इस संसार-कारागार से बाहर निकलूँगा, मोक्ष प्राप्त करूँगा।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

सम्पूर्ण मानव समाज का महोत्सव है - महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मोत्सव

भारत की पुण्यधरा पर महर्षि दयानंद सरस्वती जी महाराज का जन्म उस समय हुआ जब भारत माता परतंत्रता की बेडियों में जकडी हुई थी, चारों तरफ अज्ञान-अविद्या का अंधेरा छाया था, मनुष्य अपनी शक्तियों को भूलकर निराशा, उदासी, चिंता, भय-भ्रम के भंवर जाल में फंसकर भाग्यवादी बनता जा रहा था। मानव समाज पर अकर्मण्यता हावी हो रही थी, पूरा देश जात-पांत, छुआछूत, भेद भाव के कारण खंड-खंड हो रहा था, सती प्रथा, बाल विवाह, नारी को शिक्षा से वंचित रखना, विधवाओं का विवाह न होने देना आदि अनेक कुरीतियां प्रचलित थी। वेदज्ञान विलुप्त-सा हो गया था, स्वार्थी लोगों ने मन घड़न्त काल्पनिक ग्रंथों की रचना करके राष्ट्रभक्ति, मातृ-पितृ भक्ति, ईश्वर भक्ति के स्थान पर मानव समाज को मूर्ति पूजा के अंधेरे पथ पर धकेल दिया था, परिणाम स्वरूप अनेक मत-संप्रदाय बनते जा रहे थे और पूरा समाज तथा सामाजिक व्यवस्था चरमराई हुई थी। ऐसी विषम परिस्थितियों में फाल्गुन, कृष्ण दशमी, विक्रमी सम्वत 1881 तदनुसार 12 फरवरी सन् 1824 में महर्षि दयानंद सरस्वती जी का जन्म टंकारा-गुजरात में हुआ। महर्षि के जन्म के समय एक तरफ तो सारा सामाजिक वातावरण प्रतिकूल था किंतु दूसरी तरफ बसंत ऋतु के प्रभाव से संपूर्ण प्रकृति उत्सव मना रही थी, चारों तरफ रंग-बिरंगे फूल, स्वच्छ नीला आकाश, हरियाली और खुशहाली का प्राकृतिक वातावरण मानो संदेश दे रहा हो कि बालक मूलशंकर के रूप में जन्म लेने वाले महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा के प्रताप से ही भारत देश का भविष्य उज्ज्वल होगा, भारत की आजादी से लेकर संपूर्ण देश की गरिमा की पुनर्स्थापना का सपना साकार होगा। वास्तव में महर्षि के जन्म और जीवन की गौरव गाथा का चिंतन-मनन कर ज्ञात होता है कि महापुरुषों के बचपन के लक्षणों से ही आभाष हो जाता है कि ये साधारण रूप में असाधारण प्रतिभा संपन्न महान आत्मा है।

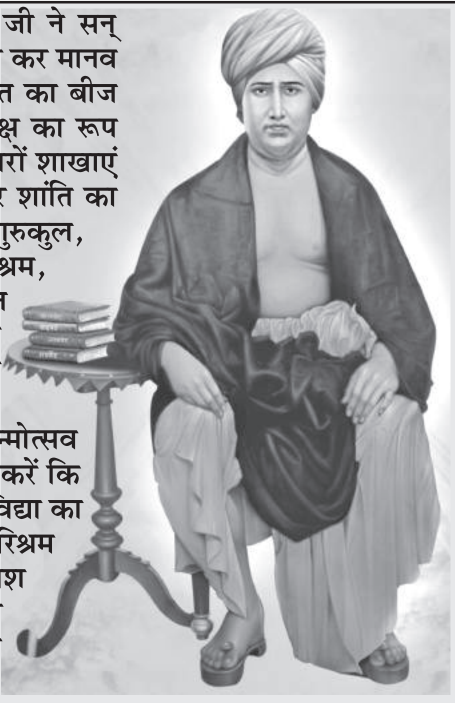

.....महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना कर मानव समाज के कल्याण के लिए अमृत का बीज बोया था। जो आज एक वट वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। जिसकी हजारों शाखाएं संपूर्ण विश्व में सुख-समृद्धि और शांति का संदेश दे रही हैं। हजारों विद्यालय, गुरुकुल, अनाथालय, वानप्रस्थ, संन्यास आश्रम, वेद और यज्ञों के शोध संस्थान गतिशील हैं, राष्ट्र और मानव सेवा के नित नए-नए आयाम स्थापित कर रहे हैं।

आइए, महर्षि के 197वें जन्मोत्सव पर हम आर्यजन मिलकर संकल्प करें कि जब तक धराधाम पर अज्ञान, अविद्या का अंधेरा रहेगा, तब तक हम अपने परिश्रम और पुरुषार्थ से वेद ज्ञान का प्रकाश करते रहेंगे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्म दिवस की सबको बहुत-बहुत बधाई।....

नहीं तो संसार में रोज नित नई घटनाएं घटित होती हैं। इन अनगिनत घटित होने वाली घटनाओं से वही व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करता है जो वास्तव में जागृत होता है। क्योंकि जीवन का अर्थ है-जागृति । कठोपनिषद् का अमृत संदेश है - उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत- उठो, जागो, प्राप्त करो। शिवरात्रि को महर्षि दयानंद सरस्वती जी को बोध हुआ था, उस रात्रि में महर्षि ऐसे जागे कि उन्होंने सारे संसार को जगा दिया। उस समय मूलशंकर 14 वर्ष की किशोर अवस्था में थे, माता-पिता, भाई-बंधु इत्यादि समस्त स्वजन शैव संप्रदाय के मतावलंबी होने के कारण पार्थिव पूजा, व्रतोपवास में विश्वास करते थे, पूरा वातावरण मूर्ति पूजक था। किशोर मूलशंकर भी अपने बड़ों की आज्ञानुसार आचरण और व्यवहार करने लगे। माघ बदी चतुर्दशी, सम्वत 1894, शिवरात्रि के अवसर पर अपने माता-पिता की आज्ञा के अनुसार महर्षि ने व्रत रखा और रात्रि जागरण में वे सम्मिलित हुए। चारों तरफ घंटे, घडियाल बज रहे थे, सुरीले स्तोत्रगान से मंदिर परिसर गुंजायमान था, धूप-दीप से सुगंधित शोभायमान वातावरण सबके मन को मोह रहा था, उपस्थित समूह ने पूरे भक्तिभाव से पहले प्रहर की पूजा पूर्ण की, दूसरे प्रहर की पूजा में भी लोग डटे रहे, किंतु तीसरे प्रहर की पूजा में सबकी आंखें मिचने लगीं और धीरे-धीरे सब निद्रादेवी के वशीभूत हो गए। अंधेरी रात्रि में मंदिर परिसर में केवल मूलशंकर ही पूरी तरह जागृत थे, उन्होंने एक स्वाभाविक घटना को घटित होते देखा, जिस ईश्वर की पूजा के लिए, उपवास और जागरण चल रहा था, उस शिव की पिंडी पर चूहे उछल कूद मचा रहे थे, पिंडी पर चढाया हुआ प्रसाद खा रहे थे, उसे गंदा कर रहे थे। इस घटनाक्रम को देखकर उनके मन में जिज्ञासा का अंकुरण हुआ, यह कैसा ईश्वर है, यह कैसा त्रिशूलधारी कैलाशपति है, क्या यही परब्रह्म है, क्या यही महादेव है, जो चूहों से भी अपनी रक्षा नहीं कर सकता? उस समय उनकी जिज्ञासा का समाधान किसी के पास न मिला, किंतु उन्होंने अपनी इस महान जिज्ञासा को तब तक अपने चित्त में जागृत रखा, जब तक वे समस्त अज्ञान-अविद्या, पाखंड, अंधविश्वासों सहित सामाजिक कुरीतियों के सशक्त समाधान के रूप में महर्षि दयानंद सरस्वती नहीं बन गए।

22 वर्ष की अवस्था में परम जिज्ञासु मुलशंकर जी घर-परिवार, सुख-समृद्धि का सर्वस्व त्याग कर सच्चे शिव की खोज में निकल गए। इस बीच उन्होंने पर्वत श्रंखलाएं, गुफाएं, कंदराएं, नदी, झरने, निर्जन वनों में, साधु-संतों, योगियों, मठाधीशों और अनेक मेलों में भी सच्चे शिव को खोजा, किंतु उनकी यह कल्याणकारी जिज्ञासा शांत नहीं हुई, पर महर्षि ने भी अपनी जिज्ञासा को लगातार जागृत रखा और वे एक दिन मथुरा में गुरु विरजानंद के पास पहुंच गए, जब गुरु विरजानंद का द्वार महर्षि दयानंद जी ने खटखटाया तो भीतर से आवाज आई कि कौन हो? महर्षि दयानंद जी ने कहा यही तो जानने आया हूं कि मैं कौन हूं? साधारणतया वैसे तो ये शब्द बोलने और सुनने में बड़े सरल प्रतीत होते हैं किंतु इन सारगर्भित शब्दों में महर्षि की शिवरात्रि पर घटित होने वाली वही जिज्ञासा समाई हुई थी, जिसके माध्यम से वे सच्चे शिव को खोज रहे थे, आज एक महान गुरु ने अपने महान शिष्य की वेदना को समझ लिया और यहीं से शुरू हो गया राष्ट्र और विश्व के कल्याण का महाअभियान, प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानंद जी के सानिन्ध्य में, शिवमयी दृष्टि से एक नई कल्याणकारी सृष्टि का शुभारंभ हो गया। गुरु से शिक्षा दीक्षा और आज्ञा प्राप्त कर महर्षि विश्व कल्याण के लिए अग्रसर हो गए।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने मनुष्य को मनुष्य बनने का संदेश देते हुए कहा था कि जो मनुष्य मननशील होकर स्वात्मवत अन्यों के सुख-दु:ख, हानि-लाभ को समझता हैं, अन्यायकारी-बलवान से भी नहीं डरता और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता है। वही मनुष्य हैं।

- शेष पृष्ठ 7 पर

197वें महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव (दयानन्द दशमी) एवं ऋषि बोधोत्सव (शिवरात्रि) पर विशेष

शिवरात्रि : प्रेरक धार्मिक पर्व

– डॉ॰ महेश विद्यालंकार

शिवरात्रि देश का सांस्कृतिक, सामाजिक और प्रेरक धार्मिक पर्व है। इसका सम्बन्ध मंगल कारी शिव परमात्मा की पूजा, अर्चना व्रत एवं संकल्प के साथ है। सभी धार्मिक आत्मा वाले अपनी पूजा भक्ति से इस पर्व को मनाते हैं। आज जो शिवरात्रि का स्वरूप मन्दिरों, तीर्थों, मीडिया और लोक प्रचलन में दिखाई देता है। वह मात्र ब्राह्य लोकाचार, आडम्बर, प्रदर्शन, तथा कर्मकाण्ड तक सीमित हो रहा है। सत्य है कि शिवरात्रि आत्मा, परमात्मा, सत्य तथा जीवनबोध का प्रेरक पर्व है। यह पर्व हमें जगाने, संभालने एवं आत्मा परमात्मा से जोड़ने की चेतना देने आता है। आज पर्वो का सत्यस्वरूप, मूल चेतना, सन्देश, प्रेरणा, उद्देश्य आदि भ्रान्त व विकृत हो रहे हैं। हम पर्वो में जीवन जगत के लिए प्रेरणा शिक्षा, सीख आदि नहीं ले जा रहे हैं। यह पर्व प्रतिवर्ष परमात्मा के सत्य स्वरूप को जानने और जीवन लक्ष्य को पहचानने का सन्देश देने आता है। जो कल्याणकारी कण-कण में सर्वत्र विद्यमान शिव रूपी परमात्मा से आत्मा के मिलने की भावना जागृत करे, वही सच्ची शिवरात्रि है। बाकी रातें हमें सुलाने आती हैं। शिवरात्रि हमें जागने, व्रती व संकल्पी बनने की प्रेरणा देने आती है।

शिवरात्रि का आर्यसमाज से गहरा सम्बन्ध है। शिवरात्रि आर्य समाज के बीजांकुर का प्रथम दिन है। इसलिए आर्य विचारधारा और ऋषि भक्तों के लिए इस दिन का ऐतिहासिक प्रेरक महत्त्व है। यदि मूलशंकर के जीवन में शिवरात्रि सत्यबोध लेकर न आती, तो मूलशंकर दयानन्द न बनते। यदि ऋषि दयानन्द न होते तो आर्य समाज न होता। आर्यसमाज न बनता तो सत्य सनातन वैदिक धर्म का सत्य स्वरूप, नजर न आता। वेदों का उद्धार कैसे होता? स्त्री और शूद्धों को वेद पढ़ने-पढ़ाने की वकालत कौन करता? धर्मग्रन्थों तथा महापुरुषों के व्यक्तित्व व कृतित्त्व का असली स्वरूप दृष्टिगोचर न होता। हम सब लोग न जाने किन-किन दुर्गुणों, दुर्व्यसनों, अधंविश्वास, ढोंग-पाखण्ड, गुरुडम आदि में फंसे हुए होते। न जीवन उद्देश्य और न सार्थक जीवन जीने का ढंग पता होता। आर्य समाज के उपकारों व योगदान में संसार उपकृत है। आर्य समाज के जन्म, स्थापना, निर्माण और इतिहास में शिवरात्रि बोध रात्रि बनकर आई। संसार की साधारण घटनाएं और जीवन के मोड़ महापुरुषों के जीवन में परिवर्तन तथा क्रान्ति घटित कर जाते हैं। मूलशंकर शिवरात्रि की रात जागने के बाद काभी जीवन भर चैन से नहीं सोये। इसी दिन शंकर के वास्तविक सत्यस्वरूप को जानने और उसे पाने की प्रबल इच्छा हुई थी। छोटी-छोटी घटनाओं, उपदेशों तथा बातों से जीवन बदल जाते हैं। जीवन का काया कल्प होने लगता है। पतित जीवन प्रेरक जीवन बन जाता है। योगी विलासी दुर्व्यसनी जीवन तपस्वी त्यागी और परोपकारी बन जाते हैं। यह तब होता है जब अन्दर से जागरूकता, आत्मचिन्तन, जिज्ञासा, भूख और प्रबल इच्छाशक्ति उद्‌बुद्ध होती है। तभी कहा गया है– जो जागत है, वह पावत है। वेद भी कहता है –

"यो जागार तम् ऋचा कामयन्ते"

जो जागता है उसे ही आत्मज्ञान तथा सत्यज्ञान प्राप्त होता है। अधिकांश लोग संसार में अनजाने में आते, और अनजाने में ही संसार से चले जाते हैं। उन्हें पता ही नहीं होता है कि यह अमूल्य, दुर्लभ, मानव जन्म क्यों मिला था। इसे पाने का उद्‌देश्य क्या है? शिवरात्रि आत्मज्ञान तथा सत्य ज्ञान का पर्व है। सच्चे शिव से जुड़ने सच समझने का सन्देश देती है। जड़ पूजा से चेतन पूजा की ओर चलो। बाहर की

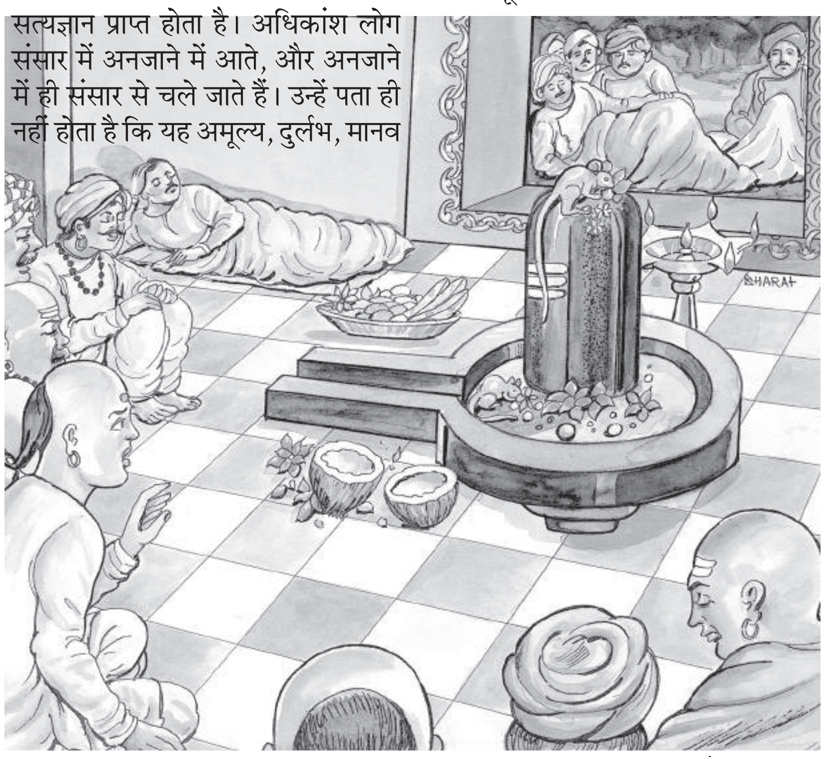

दुनिया से अन्दर की दुनिया में जाओ। उठो। जागो? अपने स्वरूप को समझो? जीवन जगत को संभालो। जीवन बड़ी तेज़ी से व्यर्थ की बातों में निकला जा रहा है। शिवरात्रि कह रही है मूलशंकर को बोध हो गया। हमें कब बोध होगा। हम कब अपना बोधोत्सव मनायेंगे। हम कब जागेंगे और संभलेंगे। ये पर्व आत्म शुद्धि आत्मविश्लेषण तथा आत्मनिरीक्षण का है। अपने पास बैठने का है। अपने से बात करने का है। सोचो! समझो कहाँ से चले थे, कहां जा रहे हैं। संसार के बारे में हम बहुत कुछ जानते हैं। मगर अपने आत्मा परमात्मा के बारे में सोचे तथा अज्ञानी है। कितनी शिवरात्रियां आई और चली गई। हम वहां के वहीं खड़े हैं।

हमें जुलूस, लंगर, फोटो, माला, स्वागत सम्मान आदि में समस्त शक्ति, सोच, धन भाग दौड़ पूरी हो जाती है? कहीं भी आत्मचिन्तन, आत्मसुधार, बैचेनी, व्याकुलता और पीड़ा नजर नहीं आ रही है। यहीं पर्वों, उत्सवों, महासम्मेलनों तथा धार्मिक कार्यक्रमों की त्रासदी है। तत्काल कुछ समय प्रभाव, भाव-भावना व प्रेरणा रहती है। बाद को सब बराबर हो जाता है। इन बातों पर तत्काल गंभीरता से विचार – मन्थन करने की जरूरत है। जब तक जीवन में आर्यत्व, सत्याचरण, शुद्धता, पवित्रता, धार्मिकता आदि न होगा, तब तक दूसरों को आकर्षित व प्रभावित न कर सकेंगे। जलता हुआ दीया ही दूसरे दीये को जलाने में समर्थ होता है, बुझा दीया दूसरे को नहीं जला पाता है। जीवन से जीवन बनते और सुधारते हैं। आज हमारे जीवनों में धार्मिकता, आध्यात्मिकता, वैदिकता, प्रभुभक्ति स्वाध्याय, आत्मचिन्तन आदि तेजी से छूट रहे हैं? इसी कारण बाह्यजगत् में धूमधाम है, अन्त:जगत् सुनसान अशान्त, बैचेन तथा परेशान है। ये बातें जीवन-जगत् को संभालती और रक्षा कवच का काम करती है।

पहले के लोगों में आस्तिकता, धार्मिकता तथा शुद्धाचरण की प्रधानता होती थी। आज उसका अभाव हो रहा है। आर्य समाज शरीर से बढ़ व फैल रहा है। आस्तिकता प्रभु भक्ति तथा आत्मा से सिकुड़ रहा है।

आर्य समाज का जीवन दर्शन अपने में प्रमाणिकता, व्यावहारिकता तथा पूर्णता लिए हुए है। इस के विचारों, आदर्शो, सिद्धान्तों आदि से जो जीवन जगत को मार्गदृष्टि व सन्देश मिलता है। उसका मुकाबला संसार की कोई विचारधारा नहीं कर सकती है। आज के जीवन-जगत को आर्य विचारधारा के सही मार्गदर्शन के लिए अत्यन्त आवश्यकता है। पीड़ा व कष्ट है कि कहने को श्रेष्ठ व समर्थक विचारों का धनी आर्य समाज अपने मूल आदर्शो, उद्‌देश्यों विचारों आदि से हट तथा कट रहा है। जहां सच्चे अर्थ में सेवा, सहयोग, भाईचारा, एकता, संगठन और मिशनरी भावना होनी चाहिए। वहां स्वार्थ पदलिप्सा, अहंकार, पदों को पाने और बने रहने की भावना तेजी से बढ़ती जा रही है। इन बातों में हम लोगों से दूर होते जा रहे हैं। जो लड़ाई हमें ढ़ोंग, पाखण्ड, अज्ञान, अन्धविश्वास तथा दूसरे पाखण्डी सम्प्रदाय वालों से करनी थी। वह छोड़कर हम आपस में ही व्यर्थ की बातों विचारों पदों आदि के लिए लड़ पड़े। इस कारण आर्य समाज की विश्वसनीयता, साख, सम्मान, पहचान आदि कम हो रही है। युवा पीढ़ी हम से कट रही है। इन बातों पर अधिकारियों तथा समाज के शुभ चिन्तकों को मिल बैठकर तत्परता में सोचने की जरूरत है। जो रीढ़ की हड्‌डी योग्य विद्वान, संन्यासी, समर्पित कार्यकर्ता आदि हैं। वे अलग-अलग हो रहे हैं। उन्हें महत्त्व नहीं दिया जा रहा है। आर्य समाज के संगठन का प्रजातान्त्रिक ढांचा चरमरा रहा है।

यह शिवरात्रि का प्रेरक पावन पर्व हम सब आर्यों और ऋषि भक्तों को जागरण का अमर सन्देश दे रहा है। जो गुजर गया, उसे छोड़े। वर्तमान को संभालो। चिन्ता नहीं चिन्तन करो। हमने अपनी सोच विचार स्वभाव आदत तथा व्यवहार को बदलना है। सोच विचार बदलते ही जीवन बदल जाता है। जीवन के बदलते ही दुनियां बदल जाती है। जो जीवन में दुरितानि हैं, उन्हें हटाना और यह भद्र को अपनाना है। पहले हमने अपना सुधार व कल्याण करना है। तभी हम दूसरों को प्रेरित व आकर्षित कर सकेंगे।

आओ! ऋषि जन्मोत्सव तथा बोधोत्सव पर आत्मबोध तथा आत्मचिन्तन करें। स्वयं जागे और दूसरों को जगायें। यह शिवरात्रि हम सबके लिए नव जागरण बन जाए। यही शिवरात्रि और ऋषिवर का अमर सन्देश है।

– बी.जे.-29, शालीमार बाग, दिल्ली-110088

प्रेरक प्रसंग

वेद प्रचार की लग्न ऐसी हो

आचार्य भद्रसेनजी अजमेरवाले एक निष्ठावान् आर्य विद्वान् थे। 'प्रभुभक्त दयानन्द' जैसी उत्तम कृति उनकी ऋषिभक्ति वा आस्तिक्य भाव का एक सुन्दर उदाहरण है। अजमेर के कई पौराणिक परिवार अपने यहाँ संस्कारों के अवसर पर आपको बुलाया करते थे। एक धनी पौराणिक परिवार में वे प्राय: आमन्त्रित किये जाते थे। उन्हें उस घर में चार आने दक्षिणा मिला करती थी। कुछ वर्षो के पश्चात् दक्षिणा चार से बढ़कर आठ आने कर दी गई।

एक बार उस घर में कोई संस्कार करवाकर आचार्य प्रवर लौटे तो सुपुत्रों श्री वेदरत्न, कैप्टिन देवरत्न आदि ने पूछा-क्या दक्षिणा मिली? आचार्यजी ने कहा-आठ आना।

बच्चों ने कहा-आप ऐसे घरों में जाते ही क्यों हैं? उन्हें क्या कमी है?

वैदिक धर्म का दीवाना आर्यसमाज का मूर्धन्य विद्वान् तप:पूत भद्रसेन बोला- चलो, वैदिकरीति से संस्कार हो जाता है अन्यथा वह पौराणिक पुरोहितों को बुलवालेंगे। जिन विभूतियों के हृदय में ऋषि मिशन के लिए ऐसे सुन्दर भाव थे, उन्हीं की सतत साधना से वैदिक धर्म का प्रचार हुआ है और आगे भी उन्हीं का अनुसरण करने से कुछ बनेगा।

– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : **पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

दिल्ली में स्थान-स्थान पर हो रहें हैं यज्ञ, भजन, प्रवचन एवं वस्त्र वितरण के कार्यक्रम

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत कार्यरत वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के माध्यम स्थान स्थान पर यज्ञ, घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ, भजन, प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस अवसर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के सेवा प्रकल्प ''सहयोग'' द्वारा वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति हेतु वस्त्रों व शिक्षा हेतु किताबों, खिलोनों का वितरण किया जा रहा है। प्रान्तीय स्तर पर दिल्ली में सहयोग का कार्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत किया जा रहा है।

दिनांक 26 फरवरी, 2021 की प्रात: सुबह का हवन मंडावली के एक ऐसे क्षेत्र में किया गया जो कूड़ेदान के नाम से मशहूर है। दिनांक 27 फरवरी की शाम का सामूहिक हवन सुदर्शन पार्क नियर मोती नगर में किया गया। यहां पर यह हमारा पहला हवन था और लोगों ने अच्छी प्रतिक्रिया देते हुए हर महीने इसी जगह पर हवन करवाने का अनुरोध किया और हमने आश्वासन दिया।

दोपहर का सामूहिक हवन मायापुरी चौक कीर्ति नगर में करवाया गया, यहाँ पर भी हमारा यह पहला हवन था, उम्मीद से ज्यादा लोग आज हवन में सम्मिल्लित हुए।

दिनांक 27.02.21 एवं 28.02.21 चूना भट्टी, कीर्ति नगर , सुदर्शन पार्क, सुदामा पुरी, झिलमिल कालोनी, क्लस्टर कॉलोनी, कीर्ति नगर, दिल्ली में श्री संत रविदास जी की जयंती के उपलक्ष्य में यज्ञ एवं वस्त्र-बर्तनादि वितरण किया गया।

योगियों, संतो की पुण्यभूमि भारत! में हिन्दू धर्म के एक महान संत रविदास जी की जयंती थी। अपने जप तप योग व सर्वथा सरल स्वभाव से जन जन के आदरणीय बाबा श्री रविदास समाज में अध्यात्म का प्रतीक बने।

हर जगह का कार्यक्रम बहुत ही सुंदर रहा। कीर्ति नगर और सुदर्शन पार्क के कार्यक्रम का आयोजन हवन उत्थान जन कल्याण समिति द्वारा किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी रहे। कार्यक्रम की मुख्य विशेषता ये रही कि यहाँ यज्ञ में आए हुए लोगों का उपनयन संस्कार किया गया।

झिलमिल कालोनी क्षेत्र के कार्यक्रम में लायंस क्लब और आर्य समाज सूरजमल विहार के अधिकारियो की मुख्य भूमिका रही। क्षेत्र के पार्षद श्री पंकज लूथरा जी ने भी कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। क्षेत्र के प्रधान श्री राजपाल जी ने लोगों को यज्ञ से जोड़ा।

सुदामा पुरी का कार्यक्रम शाम को हुआ जो बेहद शानदार रहा जहाँ यज्ञ के ब्रह्मा बने आचार्य दिनेश शास्त्री जी ने बहुत ही ओजस्वी वक्तव्य दिया जिसका प्रभाव ये था कि अंधेरा होने के बाद भी सभी महिलाएं यज्ञ में बैठी रही। कार्यक्रम में महाशय जी की योजनाएं और उनके द्वारा किये गए सामाजिक कार्यो के बारे में बताया गया।

28 आज का सामूहिक हवन दोपहर का मोती नगर रामचंद्र पार्क की क्लस्टर में किया गया। यहां भी पहला हवन था और पहली बार में ही लोगों का अच्छा सहयोग मिला।

आपका योगदान - 'सहयोग' के माध्यम से आप इस सेवा का हिस्सा बन सकते हैं। आपके घर में बहुत-सा ऐसा सामान होता है जो आपके काम नहीं आता है किन्तु किसी अन्य के लिए वह बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। आप वह सामान हमें दें, हम उसे हर जरूरतमंदों तक पहुँचाएंगे।

आप हमें 'वस्त्र, पुस्तकें, खिलौने, जूतें, चप्पल, आदि' सामान दे सकते हैं। आप सामान एकत्र करके सहयोग टीम को 9540050322 पर कॉल करें। हमारी गाड़ी आपके घर से सामान लेकर आएगी। आप अपना सहयोग हमारे कार्यालय आकर भी दें सकते हैं। कार्यालय पता है-

आर्य समाज मन्दिर,
डी.सी.एम. रेलवे कोलोनी,
निकट फिल्मिस्तान,

बाल बोध

विद्यार्थी प्रतिभा विकास के सूत्र

अक्सर अभिभावकों द्वारा सुनने में आता है कि हमारे बच्चे का दिमाग थोड़ा मोटा है, उसमें थोड़ी बुद्धि कम है आदि, किसी भी विद्यार्थी का दिमाग मोटा-पतला नहीं होता, पर कुछ बनने की और आगे बढ़ने की लगन मन में होनी ही चाहिए। लगन से व्यक्ति गगन तक पहुंच जाता है। अगर विद्यार्थी परिश्रमी है और पुरुषार्थी है तो उसकी बुद्धि सदैव प्रखर रहती है। जो भावनात्मक प्रतिभा अन्दर है, उसे विकसित कैसे करें? पहली बात यह है कि सामने चाहे कैसी भी स्थिति क्यों न हो, जल्दी घबराएं नहीं, बल्कि हिम्मत रखकर चलें। ऐसे विचारों को मन में भी न आने दें कि अब हम कुछ नहीं कर सकते हैं, हमारे पास तो कुछ भी नहीं है और हम तो बहुत गरीब हैं। हमारा तो कोई साथ देने वाला भी नहीं है। हमारे मां-बाप तो किसी मिनिस्टर के रिश्तेदार नहीं हैं। हम लोग तो वैसे भी पीछे हैं। पैसे की बहुत कमी है। हमारे पिता का कोई भी पद नहीं है। अगर आप में कुछ बनने की हिम्मत है तो आप अपनी लगन के माध्यम से लगातार आगे बढ़ते जाएंगे, केवल अपना धैर्य, हिम्मत, साहस बनाए रखें, यहां पर प्रस्तुत हैं विद्यार्थी प्रतिभा विकास के कुछ सूत्र - सम्पादक

गतांक से आगे -

पढ़ने वाला कमरा भी आपका ऐसा होना चाहिए कि जिसमें ताजी हवा आती-जाती हो। ऐसे कमरे में मत बैठिए जिसमें हमेशा घुटन रहती हो। हो सके तो पूर्व की ओर अपना मुख करके, अपनी टेबल को पूर्व की दिशा में लगाइए। जिससे आपका चेहरा पूर्व की ओर हो। क्योंकि प्रकाश उधर से ही आता है; इसलिए उनके अन्दर ज्ञान भी बहुत तेजी से आएगा। वे अध्ययन के समय जागरूक रहेंगे और परीक्षा में अवश्य सफल होंगे।

दूसरी बात यह है कि कम्पटीशन वाले विद्यार्थी डरकर नहीं पढ़ें। चाहे वे अट्ठारह घण्टे बैठकर पढ़ें, लेकिन उनके अन्दर घबराहट है, तो फिर पढ़ा हुआ याद नहीं हो पाता। दिमाग में पढ़ा हुआ सुरक्षित नहीं होगा, रिकार्ड नहीं होगा। कई विद्यार्थी पढ़ते समय गाने भी चला लेते हैं और साथ में पढ़ते भी रहते हैं, लिखते भी रहते हैं। वे सोचते हैं कि ऐसे में अच्छी पढ़ाई होती है लेकिन यह विधि, यह प्रक्रिया बिल्कुल गलत है। जैसे कोई टेपरिकार्ड से आवाज रिकार्ड करना चाहता है; किन्तु आसपास से गाड़ियां जा रही हों, लोग भी बोलते हुए जा रहे हों, तो क्या वहां बढ़िया रिकार्डिंग हो सकती है? जैसे रिकार्डिंग के लिए साउण्डप्रूफ स्टूडियो बनाया जाता है। ठीक ऐसे ही जहां आप पढ़ना चाहते हैं वह स्थान भी एकदम शान्त और एकान्त होना चाहिए। जिससे कॅन्सेन्ट्रेशन पूरी तरह से बनाया जा सके।

रजिस्ट्रेशन से मतलब है जो आप पढ़ रहे हैं, वह ठीक ढंग से रिकार्ड हो सके। आपके दिमाग में प्रवेश हो सके। बहुत ध्यान से रुचिपूर्वक पढ़िए। रुचि पैदा करके पढ़ने में मन लगाना चाहिए। यह सोच करके पढ़िए कि यही ज्ञान मेरा भविष्य तय करेगा। मेरा भविष्य इसी से बनेगा। जो क्लास में प्रथम आते हैं, वे आसमान से उतरे हुए कोई फरिश्ते नहीं होते। सोचना चाहिए कि जैसे वे हैं, वैसे ही मैं हूं। मुझे थोड़ी-सी कोशिश ज्यादा करनी पड़ेगी। बस इतनी-सी बात है। थोड़ा टाइम पढ़ाई में ज्यादा लगेगा तो आप भी आगे बढ़ सकते हैं ऐसा मन में विश्वास रखकर पढ़ें।

मनोविज्ञान के अनुसार मानव मस्तिष्क में तीन चीजें हैं। एक है सुपर कॉन्शस माईण्ड, दूसरा सबकॉन्शस माईण्ड और तीसरा कॉन्शस माईण्ड। जो सबकॉन्शस माईण्ड है वह आपका अवेचतन मन है। वहां जाकर आपकी सारी चीजें रिकार्ड होती हैं। आपकी प्रैक्टिस वहां जा करके अंकित हो जाती है। इसके लिए यह करें कि जब भी आप पढ़ें, तो इतना मन लगाकर पढ़ें कि वह स्टोर हो जाए और जब स्टोर हो जाए, तो जो आपने याद कर लिया है, उसे रिवाईज जरूर किया करें। जो आपने पढ़ा उसके पॉइन्ट्स नोट कर लिया करें। पॉइन्ट्स नोट करने के बाद दुबारा रिवाईज करने का मौका आए, तो उन्हीं पॉईन्ट्स को देखकर, एक बार सरसरी नजर पूरे पाठ पर डाल लीजिए। इससे आपको अपना पाठ हमेशा याद रहेगा।

पुस्तक विमोचन

"महर्षि दयानन्द : प्रतिरोध की गहराई" पुस्तक का जे.बी.एम. ग्रुप के चेयरमैन श्री सुरेन्द्र आर्य जी ने किया विमोचन

अंग्रेजी एवं हिन्दी के साथ-साथ छह अन्य भाषाओं में भी होगा पुस्तक का प्रकाशन - आचार्य एम. आर. राजेश

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति प्रो. रूप किशोर शास्त्री ने दी ग्रन्थ के लोकार्पण पर शुभकामनाएं

21 फरवरी, 2021: आचार्य श्री राजेश जी द्वारा लिखित "महर्षि दयानंद : प्रतिरोध की गहराई" इस पुस्तक का विमोचन महर्षि दयानंद के शिष्य एवं जे.बी.एम. ग्रुप के अध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार आर्य जी के कर-कमलों से ऑनलाइन रूप से किया गया।

वर्चुअल कार्यक्रम में अपना उद्बोधन देते हुए श्री सुरेन्द्र आर्य जी ने कहा कि भारत में भारतीयों के लिए स्वराज का संकल्प 19वीं शताब्दी में सबसे पहले महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा प्रस्तावित किया गया था। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानंद एक महान वेद प्रचारक होने के साथ-साथ सच्चे देशभक्त भी थे।

उन्होंने कहा कि इस पुस्तक में बताया गया है कि महर्षि दयानन्द ने वेदों में एकेश्वरवाद के संकल्प की खोज कैसे की। इसके अलावा, आदि शंकराचार्य, स्वामी विवेकानंद, श्री अरबिंदो तथा दयानंद के दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन और आधुनिक भारत के निर्माण में दयानंद की भूमिका की दृष्टियों का पुस्तक में महत्वपूर्ण विषय है।

आचार्य श्री राजेश जी ने कहा कि, यह पुस्तक मलयालम के साथ-साथ हिंदी, अंग्रेजी सहित छह भाषाओं मे प्रकाशित होगी।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने कहा की जो काम महर्षि दयानंद जी ने आरंभ किया था, वह आज भी केरल में आचार्य श्री राजेश द्वारा चल रहा है और उन्हीं के द्वारा लिखी गई यह पुस्तक इतिहास में मील का पत्थर साबित होगी। डॉ. रूप किशोर शास्त्री जी ने कहा कि आचार्यश्री राजेश आज दक्षिण भारत में वैसा ही वेदप्रचार कर रहे हैं जैसा स्वामी श्रद्धानंद जी ने उत्तर भारत में किया था। हमें आचार्यश्री के रूप में श्रद्धानंद वापस मिल गये हैं।

कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन के ट्रस्टी विवेक शिनॉय ने समारोह की अध्यक्षता की। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी भी इस कार्यक्रम में ऑनलाइन रूप से उपस्थित रहे। आचार्यश्री की धर्मपत्नी श्रीमती मीरा राजेश जी की विशिष्ट उपस्थिति रही।

कश्यप सेंटर फॉर वैदिक स्टडीस की निर्देशक एम. आर. वेदलक्ष्मी जी ने कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि महानुभावों का स्वागत किया और सेंट्रल एक्साईज एण्ड कस्टम्स असिस्टेंट कमिश्नर ओ प्रदीप वैदिक ने कृतज्ञता ज्ञापन प्रकट किया। आर्यसन्देश टीवी, यू ट्यूब एवं फेस बुक पर कार्यक्रम का सीधा प्रसारण पर किया गया।

- कार्यक्रम संयोजक

"महर्षि दयानंद : प्रतिरोध की गहराई" पुस्तक का विमोचन करते जे.बी.एम. ग्रुप के चेयरमैन श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, श्रीमती मीरा राजेश, लेखक आचार्य श्री एम.आर. राजेश एवं समारोह अध्यक्ष श्री विवेक शिनॉय जी।

उद्बोधन देते सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी

ग्रेटर कैलाश नई दिल्ली में "महर्षि दयानन्द सरस्वती मार्ग" का नामकरण समारोह सम्पन्न

एकासुर विथी मार्ग जो पुराना पुलिस थाना, ग्रेटर कैलाश-1 के सामने से शुरू होकर कैलाश कॉलोनी मार्किट गोल चक्कर तक जाती है उसका नाम 'महर्षि दयानन्द सरस्वती मार्ग' रखा गया है। नामकरण दिनांक 24 फरवरी 2021 को एक समारोह में संपन्न हुआ। इस समारोह में श्रीमती मीनाक्षी लेखी, सांसद नई दिल्ली क्षेत्र तथा श्रीमती शिखा रॉय, पूर्व अध्यक्षा स्थाई समिति दक्षिणी दिल्ली नगर नगम के कर कमलों द्वारा हुआ। समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, टंकारा ट्रस्ट एवं डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी के मंत्री श्री अजय सहगल तथा इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ योग एंड नेचुरोपैथी के निदेशक श्री नितिन्जय चौधरी भी उपस्थित हुए। आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश के प्रधान-श्री विजय लखनपाल ने सभा में उपस्थित सदस्यों को बताया

कि इसका श्रेय श्रीमती मीनाक्षी लेखी तथा श्रीमती शिखा राय को जाता है। इसके अतिरिक्त ग्रेटर कैलाश रैजिडेंट ऐसोसिएशन तथा अन्य वैलफेयर सोसायटियों का सहयोग भी मिला।

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1 के मंत्री श्री राजेन्द्र कुमार ने समारोह का बड़ी कुशलता से संचालन किया। मुख्य अतिथियों व श्री विनय आर्य ने भी महर्षि दयानन्द के समाज के प्रति योगदान की प्रशंसा की, जिससे आर्य समाज गौरवान्वित है। श्री राजीव चौधरी, वरिष्ठ उप-प्रधान, ने मुख्य अतिथियों तथा ग्रेटर कैलाश रैजिडेंट ऐसोसिएशन तथा अन्य वैलफेयर सोसायटियों को सहयोग के लिए आभार व धन्यवाद दिया। समारोह के पश्चात् कैलाश कॉलोनी मार्किट गोल चक्कर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती मार्ग का नामकरण ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मन्त्रों के साथ किया गया। कार्यक्रम के उपरान्त समस्त उपस्थित महानुभवों के लिए आर्यसमाज की ओर से ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई। - *मन्त्री*

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा पूर्वोत्तर में शिक्षा संस्थानों एवं कार्यों का निरीक्षण

22 फरवरी, 2021 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अधिकारियों द्वारा पूर्वोत्तर स्थित शिक्षा संस्थानों धनश्री, बोकाजान एवं दीमापुर का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर श्री विनय आर्य जी, श्री संजीव गर्ग जी, आचार्य सन्तोष जी एवं स्थानीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथ धाम प्रबंधकारिणी समिति की बैठक सम्पन्न

दिनांक 21 फरवरी 2021 को तय कार्यक्रमानुसार गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथ धाम प्रबंधकारिणी समिति की बैठक, गुरुकुल वैद्यनाथ की भूमि पर बना नव-निर्मित विद्यालय भवन महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानंद आर्य विद्यानिकेतन गुरुकुल वैद्यनाथ धाम, देवघर के परिसर में आयोजित की गई, जिसमें विद्यालय से जुड़ी समस्याएं, संचालन एवं भूमि आदि से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई। बैठक में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, बंगाल, बिहार एवं झारखंड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के चुने हुए प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिनमें श्री विनय आर्य जी, जगदीश प्रसाद केडिया जी, योगेश शास्त्री जी, संजीव गर्ग जी एवं श्री अरविन्द वाजपेयी जी प्रमुख रहे।

Continue From Last issue

Makers of the Arya Samaj : Pt. Lekh Ram Ji

..... Lekh Ram was born in 1858 at Syadpur. All were pleased at his birth, but none was happier than his father, Tara Singh. Even as a boy Lekh Ram appeared to be very intelligent. His parents had high hopes about him. When he was five years old he was sent to the village school. There he was taught Urdu and Persian. At that time Urdu and Persian were the languages ofthe court. Lekh Ram's parents were anxious for him to get a Government position. This was but natural, for in those days even a petty Government position was thought to be more important than any other. ....

To start with, there were only four members. But after some time they had a fifth member also. He was the man from whom Lekh Ram had learnt Vedant. For a long time this gentleman refused to accept the new faith. At last when arguments had failed, Lekh Ram said to him, “There are five of us, and we are all very good friends. Four of us are now members of the Arya Samaj, and we want you to be the same. Even if you do not want to do it for any other reason, you should join for friendship's sake. Thus all five of us will stand together in this matter, as we have done in so many other things.” This caused their friends to change his mind. The five of them were then able to do a great deal of work for the Arya Samaj.

After this Lekh Ram began to live like a true Arya Samajist. He said his prayers every day. He read the Vedas and other scriptures without fail. All these greatly increased his faith in theArya Samaj. At last in 1880 he thought of going to Ajmer. His purpose in doing so was to see Swami Dayanand, the great reformer, and to talk with him on various matters.

He took leave for a month and set out for Ajmer. On the way he stopped at Lahore, Amritsar, Meerut and other places. At these places he met prominent members of the Arya Samaj. He had many talks. with them about the Arya Samaj. A few days later he reached Ajmer. Then one morning he went to see the rishi in the garden where he was staying.

It was a very interesting meeting. Lekh Ram forgot all the hardships of the journey as soon as he saw his guru. He then placed some of his difficulties before him. These Swamij i explained very clearly. He still asked more questions. To all he got very satisfactory answers. One ofthese questions was whether the followers of other faiths should be converted to the Vedic religion or not. Swamiji said that they should be. He also asked such questions as, “What is electricity?” Swamiji explained them all very briefly. In the end Swamiji asked Lekh Ram not to marry till he was twenty-five.

This meeting strengthened Lekh Ram's faith in the Arya Samaj. He went back fully convinced that the truth was only to be found in the Vedas, But he did not neglect the study of other religions. One day he was found reading some books on Islam. A friend of his asked him why he was doing so. He replied, “Just think for a moment that you are thirsty, and in front of you there are ten pitchers full of water. You want to drink only that water which is cool and fresh. You take a little from every pitcher, therefore, to find which is the best. You then drink that which you find to be the best of all. The case is similar with religion. There are many religions in this world. I must know something about all of them. Only then can I judge which is the best.”

On his return from Ajmer Lekh Ram began to take more and more interest in the Arya Samaj. In the first place, he took to the study of Sanskrit. He even wanted to go to Benares to master this language. It was because he felt that without reading Sanskrit he could not understand the Vedas, the sacred books of the Hindus. He also started a monthly called The *Dharamupdesh in* Urdu. The object of this paper was to make the Arya Samaj better known.

At the same time he began to deliver lectures. One of his lectures was on the evils of drinking. Many prominent people came to hear this. These included some Englishmen. At the end of the lecture an English Captain in the army said, “I agree with every word that the lecturer has spoken. I know the evils of drinking. I have, therefore, forbidden the soldiers in my regiment to drink.”

After some time Lekh Ram was transferred from Peshawar to an outlying station. But he still continued to edit the monthly. He also paid his subscriptions regularly to the Arya Samaj. Nor did he give up his interest in spreading his faith. It is said that one day an Inspector of Police came to visit the Police station. Lekh Ram talked with him about religious matters. In this discussion he had the better of the officer. The Inspector, therefore, felt very humiliated, so he made up his mind to punish him. On reaching Peshawar he sent orders that Lekh Ram should be degraded. He also transferred him to another place.

To be continued......

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

संस्कृत वाक्य प्रबोध

गृहाश्रम एवं भोजन प्रकरणम्

गतांक से आगे -

संस्कृत	**हिन्दी**
93. बुद्धिमता तु यावज्जीर्यते तावदेव भुज्यते।	बुद्धिमान् पुरुष तो जितना पचता है उतना ही खाता है।
94. अतिस्वल्पे भुक्ते शरीरबलं ह्रसत्यधिके चात: सर्वदा मिताहारी भवेत्।	बहुत कम और अत्यधिक भोजन करने से शरीर का बल घटता है, इससे सब दिन मिताहारी होवे।
95. योऽन्यथाऽऽहारव्यवहारौ करोति स कथं न दु:खी जायेत?	जो उलट-पलट आहार और व्यवहार करता है वह क्यों न दु:खी होवे?
96. येन शरीराच्छ्रमो न क्रियते स शरीरसुखं नाप्नोति।	जो शरीर से परिश्रम नहीं करता वह शरीर के सुख को प्राप्त नहीं होता।
97. येनात्मना पुरुषार्थो न विधीयते तस्यात्मनो बलमपि न जायते।	जो आत्मा से पुरुषार्थ नहीं करता उसका आत्मा का बल भी नहीं बढ़ता।
98. तस्मात्सर्वैर्मनुष्यैर्यथाशक्ति सत्क्रिया नित्यं साध्नीया:।	इससे सब मनुष्यों को उचित है यथाशक्ति उत्तम कर्मों की साधना नित्य करनी चाहिये।
99. भो देवदत्त! त्वामहं निमन्त्रये।	हे देवदत्त! मैं तुमको भोजन के लिए निमन्त्रित करता हूं।
100. मन्येऽहं कदा खल्वागच्छेयम्?	मैं मानता हूं परन्तु किस समय आऊँ?
101. श्वो द्वितीयप्रहरमध्ये आगन्तासि।	कल डेढ़ पहर दिन चढ़े आना।
102. आगच्छ भो, आसनमध्यास्व, भवता ममोपरि महती कृपा कृता।	आप आइये, आसन पर बैठिये, आपने मुझ पर बड़ी कृपा की।

क्रमश: - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

भय से मुकाबला (fight or flight)

गतांक से आगे -

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

....जिस कार्य को आपने अभी तक नहीं किया है उसी को प्राथमिकता दें। प्रारम्भ में कुछ कठिनाईयां आ सकती हैं। ऐसे कार्य के टुकड़ों में बांट लें। जब उसका एक भाग पूरा हो जाये तब दूसरे की ओर ध्यान दें, याद रखें गिर कर ही घुड़सवार बनता है। जो पानी से डरता है, वह कभी तैराक नहीं बन सकता। उसे तैरना सीखने के लिये पानी में हाथ पैर मारने ही होंगे। व्यक्ति अनुभवों से ही सीखता है।....

4. **दुर्व्यसनों से दूर रहें** - व्यसन व्यक्ति की बुद्धि को निष्क्रिय बना देते हैं। जैसे किसी चमड़े के पात्र में रखा हुआ घृत-तेल आदि घड़े में एक छिद्र भी होने के कारण स्रवित हो जाता है। वैसे ही इन व्यसनों को करने वाले व्यक्ति की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और उसे अनेक संकटों का सामना करना पड़ता है। अनेक बार प्राणों से भी हाथ धोना पड़ता है।

5. **जिस कार्य से भय लगता है उसे ही पहले करें** - जिस कार्य को आपने अभी तक नहीं किया है उसी को प्राथमिकता दें। प्रारम्भ में कुछ कठिनाईयां आ सकती हैं। ऐसे कार्य के टुकड़ों में बांट लें। जब उसका एक भाग पूरा हो जाये तब दूसरे की ओर ध्यान दें, याद रखें गिर कर ही घुड़सवार बनता है। जो पानी से डरता है, वह कभी तैराक नहीं बन सकता। उसे तैरना सीखने के लिये पानी में हाथ पैर मारने ही होंगे। व्यक्ति अनुभवों से ही सीखता है।

6. **आत्म विश्वास** - आत्म विश्वास वह शक्ति है जो मुर्दो में भी जीवन डाल देती है। मन के हारे हार है मन के जीते जीत। आत्मविश्वास से व्यक्ति अपनी समग्र ऊर्जा को एक कार्य में केन्द्रित कर सकता है। दूसरे व्यक्ति उसे मना भी करें तब भी नहीं करता।

नन्हीं चींटी दाना लेकर चलती है।
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है।
चढ़कर गिरना गिर कर चढ़ना ना अखरता है।
मेहनत उसकी खाली हर बार नहीं होतीं
कोशिश करने वालों की कमी हार नहीं होती।

7. **ईश्वर भक्ति** - पूर्ण पुरुषार्थ करने के पश्चात् ईश्वर से सहायता मांगना। ईश्वर उन्हीं की सहायता करता है जो अपनी सहायता अपने आप करते हैं।

ईश्वर भक्ति से आत्मा का बल इतना बढ़ता है कि वह पहाड़ जैसी विपत्ति से भी विचलित नहीं होता।

पृष्ठ 2 का शेष

सम्पूर्ण मानव समाज का महोत्सव है - ....

उन्होंने सर्वव्यापक, निराकार ईश्वर को सर्वोपरि मानने की ही प्रेरणा प्रदान नहीं कि अपितु "आओ लौट चले वेदों की ओर" का संदेश देते हुए ईश्वर की आज्ञा मानने को ही उसकी सबसे बड़ी भक्ति बताया। ऋषिवर ने सत्यार्थ प्रकाश जैसे ग्रंथों की रचना कर मानव समाज के ऊपर उपकार किया।

ऋषि द्वारा प्रणीत ग्रंथों का स्वाध्याय करने से मनुष्य के सारे भय-भ्रम दूर हो जाते हैं और उसे ऐसा सुपथ प्राप्त होता है जिस पर चलकर वह नित-निरंतर उन्नति, प्रगति और सफलता को प्राप्त करता जाता है।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने अपने जीवन काल में समाज में सत्य की स्थापना हेतु अनेक स्थानों पर सैकड़ों शास्त्रार्थ किए। इन शास्त्रार्थों की श्रंखला में विरोधी उनके वैदिक ज्ञान प्रवाह का जवाब देने में तो असमर्थ ही रहे लेकिन उन्होंने स्वामी जी के ऊपर ईंट, पत्थर बरसाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। स्वामी जी सदैव शारीरिक कष्ट और अपमान सहकर भी अज्ञान के अंधेरों के बीच वेद ज्ञान का उजाला फैलाते रहे। भारत राष्ट्र के अतिशय अनन्य प्रेमी के रूप में महर्षि ने सबसे पहले स्वदेशी राज्य की घोषणा करते हुए कहा था कि विदेशी राजा कितना भी महान क्यों न हो स्वदेशी राजा से अच्छा कभी नहीं हो सकता। ऐसे महान पुरुष की प्रेरणा से भारत माता को आजादी मिली थी।

यूं तो भारत में समय-समय पर अनेक ऋषि-मुनि सिद्ध सन्तों ने जन्म लिया और मानव सेवा के प्रशंसनीय कार्य किए। किंतु महर्षि दयानंद एक ऐसे महान व्यक्तित्व के स्वामी थे जिन्होंने मानव समाज को सुदिशा प्रदान करने हेतु अनेकानेक सफल आंदोलनकारी अभियान चलाए। उन्होंने निर्भीक योद्धा के रूप में समाज में फैली कुप्रथा-कुरीतियों पर ऐसा प्रहार किया कि चारों तरफ समाज सुधार का प्रकाश फैल गया। उन्होंने अपने जीवन में कभी सत्य से समझौता नहीं किया। केवल वेद का ही नहीं अपितु कुरान, पुराण, बाइबल, आदि अन्य मत- मतान्तरों के ग्रंथों का भी ज्ञान प्राप्त कर सत्य के निष्कर्ष से मानव समाज को अवगत कराया। वेदों की हर बात को डंके की चोट पर कहने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सभी पाखन्डों का खंडन कर सत्य की राह दिखाई। उन्होंने देश में धर्मान्तरण (इसाईयत व इस्लामीकरण) को ही नहीं रोका अपितु शुद्धि अभियान चलाकर उन्हें घर वापिसी का रास्ता भी दिखाया। महर्षि को कोई भी किसी भी प्रकार का लालच विचलित नहीं कर पाया। बल्कि वे अनेक यातनाएं सहकर भी अपने संकल्प को पूर्ण करने के लिए आगे से आगे बढ़ते रहे। उन्होंने यज्ञ, योग, स्वाध्याय जैसी पुरातन ऋषि महर्षियों की परंपराओं को पुनः स्थापित किया और मानव समाज को अमृत पिलाने के लिए जहर तक पी लिया। ऐसे मजान समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती जी का जन्मोत्सव संपूर्ण मानवता का महोत्सव है।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना कर मानव समाज के कल्याण के लिए अमृत का बीज बोया था। जो आज एक वट वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। जिसकी हजारों शाखाएं संपूर्ण विश्व में सुख-समृद्धि और शांति का संदेश दे रही हैं। हजारों विद्यालय, गुरुकुल, अनाथालय, वानप्रस्थ, संन्यास आश्रम, वेद और यज्ञों पर शोध संस्थान गतिशील हैं, राष्ट्र और मानव सेवा के नित नए-नए आयाम स्थापित कर रहे हैं।

आइए, महर्षि के 197 वें जन्मोत्सव पर हम आर्यजन मिलकर संकल्प करें कि जब तक धराधाम पर अज्ञान, अविद्या का अंधेरा रहेगा, तब तक हम अपने परिश्रम और पुरुषार्थ से वेद ज्ञान का प्रकाश करते रहेंगे। महर्षि जी के जन्म दिवस की सबको बहुत-बहुत बधाई।

– ***सम्पादक***

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न
श्री दयानन्द तिवारी जी प्रधान एवं डॉ. प्रमोद गोयल आर्य मन्त्री निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड का त्रैवार्षिक अधिवेशन दिनांक 13 दिसम्बर, 2021 को आर्यसमाज भेल (बी.एच.ई.एल.), हरिद्वार के सभागार में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रेषित पर्यवेक्षक एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री सुखबीर सिंह आर्य जी की अध्यक्षता एवं देख-रेख में सम्पन्न हुआ। इस निर्वाचन में बहुमत के आधार पर श्री दयानन्द तिवारी जी को प्रधान, डॉ. प्रमोद गोयल आर्य जी को मन्त्री, एवं श्री प्रवीण आर्य वैदिक को कोषाध्यक्ष निर्वाचित घोषित किया

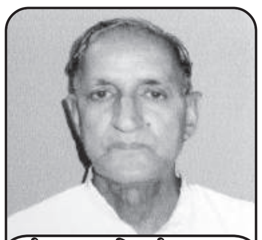
श्री दयानन्द तिवारी (प्रधान)

डॉ. प्रमोद गोयल आर्य (मन्त्री)

श्री प्रवीण वैदिक (कोषाध्यक्ष

गया। इसके साथ अन्य पदों के निम्न महानुभाव निर्वाचित घोषित किए गए-

वरिष्ठ उप प्रधान - श्री ज्ञान चन्द गुप्ता, **उप प्रधान** - श्री बी. एम. गुप्ता, श्री पृथ्वीराज आर्य, एवं श्री विजय वर्मा। **वरिष्ठ उप मन्त्री** - श्री गम्भीर सिंह सिंधवाल, **उपमन्त्री** - श्री नरेन्द्र लाल आर्य, श्रीमती संगीता आर्या, श्री प्रभात आर्य। **सह कोषाध्यक्ष** - श्री भूपेन्द्र आर्य। **अधिष्ठाता आर्य वीर दल** - डॉ. श्याम सिंह, **सह अधिष्ठाता** - श्री नवीन आर्य, डॉ. सन्दीप चौहान। **पुस्तकाध्यक्ष** - श्रीमती नन्दिनी गुप्ता, **सह पुस्तकाध्यक्ष** - श्री विनोद आर्य। **लेखा निरीक्षक** - श्री प्राणनाथ खुल्लर। **छाया सत्र** - **छाया प्रधान** - डॉ. विनय विद्यालंकार, **छाया उप प्रधान** - डॉ. श्रीकृष्ण आर्य। **छाया मन्त्री** - श्री नरेन्द्र लाल आर्य, **छाया उपमन्त्री** - श्री राजीव आर्य, **छाया कोषाध्यक्ष** - श्री पृथ्वीराज आर्य, **छाया लेख नीरिक्षक** - डॉ. गिरीश मल्होत्रा।

श्री बृहद् सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न
श्री दीपक भाई ठक्कर प्रधान एवं श्री अशोक भाई परमार मन्त्री बनें

श्री बृहद् सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा का त्रैवार्षिक समान्य सभा अधिवेशन दिनांक 22 जनवरी, 2021 को राजकोट में सम्पन्न हुआ। इस निर्वाचन में **प्रधान** - श्री दीपक भाई जयन्ती लाल ठक्कर, **व. उप प्रधान** - श्री कान्तिभाई रणछोड़ भाई किकानी, **उप प्रधान** - श्री राजेश भाई प्रवीण चन्द्र पारेख, **मन्त्री** - श्री अशोक भाई धरमशीभाई परमार, **उपमन्त्री** - श्री हरनारायण हुकमशी आर्य, **कोषाध्यक्ष** - श्री नरेन्द्र भाईछगनलाल मेहता एवं **पुस्तकाध्यक्ष** के रूप में श्री प्रवीणचन्द्र रतिलाल ठाकर को सर्वसम्मति से निर्वाचित घोषित किया गया।

समस्त निर्वाचित पदाधिकारियों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजनाओं के लिए सहयोग/दान अब और भी आसान: QR कोड स्कैन करते ही होगा भुगतान

आपको जानकर हर्ष होगा कि बैंक द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को डिजिटल पेमेंट हेतु कोड़ जारी किया गया है। अब आप किसी भी पेमेंट माध्यम - पेटीएम, फोन पे, गूगल पे, मास्टर/वीजा रुपये, भीम पे - से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित किसी भी योजना/प्रकल्प के लिए सहयोग एवं दान राशि का भुगतान केवल मात्र क्यू.आर. कोड को स्कैन करके कभी भी-कहीं से भी कर सकते हैं।

आप इस कोड के माध्यम अपने आर्यसमाज की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को देय दशांश एवं वेद प्रचार राशियों का भी भुगतान कर सकते हैं।

आप द्वारा इसके माध्यम से भेजी गई राशि तत्काल सभा को प्राप्त हो जाएगी। कृपया भुगतान करते ही आपके पास जो मैसेज आए उसका स्क्रीन शॉट लेकर अथवा सीधे उस मैसेज को 9540040388 पर व्हाट्एप्प अथवा टेलिग्राम कर दें, जिससे आपको तुरन्त रसीद जारी की जा सके।

– ***विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)***

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु. प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु. प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.	प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 1 मार्च, 2021 से रविवार 7 मार्च, 2021
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 04-05/03/2021 (गुरु-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 03 मार्च, 2021

लद्दाख राज्य में आर्यसमाज की गतिविधियां तथा शिक्षा प्रोजेक्ट संचालित करने के लिए लद्दाख के एकमात्र सांसद से शिष्टाचार भेंट

दिनांक 18 फरवरी, 2021 को आर्यसमाज के एक प्रतिनिधि मंडल लद्दाख के एकमात्र सांसद श्री जामयांग तेरसिंह से उनके दिल्ली स्थित आवास पर जाकर शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर उन्हें आर्यसमाज की ओर से ओम प्रतीक चिह्न एवं पीत वस्त्र पहनाकर सम्मानित किया गया। शिष्ट मंडल में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह जी एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामन्त्री श्री जोगेन्द्र खट्टर जी सम्मिलित रहे। इस अवसर पर उन्होंने आर्यसमाज की ओर से लद्दाख में शिक्षा प्रोजेक्ट संचालित करने तथा आर्यसमाज की गतिविधियां संचालित करने सम्बन्ध एक ज्ञापन भी दिया। माननीय सांसद महोदय ने बड़ी शालीनता, सौम्यता एवं गहनता से रूचि लेते हुए शिष्ट मंडल की बातों को सुना और हर सम्भव सहयोग उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया।

आर्यसमाज के सिक्किम प्रोजेक्ट हेतु महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी से भेंट

गत दिनों दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के उप प्रधान श्री विनय आर्य जी ने आर्यसमाज के सिक्किम प्रोजेक्ट के लिए महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी से भेंट की। ज्ञातव्य है कि सिक्किम शासन की ओर से इस कार्य के लिए गत दिनों आर्यसमाज को भूमि आबंटित की गई थी।

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
https://amzn.to/3i3rKI7
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह